राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अंतर्गत हटा क्षेत्र के विकास कार्यक्रम

हटा बुन्देलखण्ड का एक अविकसित क्षेत्र है, जहां डेयरी विकास प्रारंभिक अवस्था में है, जिले में दूध की दैनिक पूर्ति के लिए मुख्यतः यादव जाति ही पशुपालन करती है तथा ग्रामों में कृषक पारंपरिक रूप से देसी गाय पालते हैं तथा दूध से मावा (खोवा) बनाते हैं । वास्तव में पशु पालन एक लाभप्रद व्यवसाय का रूप नहीं होकर मात्र परम्परा का निर्वाह मात्र ही कर रहा है ।

वर्ष 2010 में जिले में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत 2000 लीटर क्षमता का बल्क मिल्क कूलर स्थापित किया जाकर डेयरी विकास हेतु नींव का पत्थर रखा गया । राष्ट्रीय कृषि विकास योजना से प्राप्त 50 लाख की राशि से 2000 लीटर क्षमता का शीतकेन्द्र एवं भवन हटा में स्थापित किया गया तथा 15 दुग्ध सहकारी समिति हटा, बटियागढ तथा सकौर मार्ग पर प्रारंभ की गई । प्रथम दिन 186 लीटर दूध शीतकेन्द्र पर प्राप्त हुआ व धीरे धीरे पशुपालक दुग्ध सहकारी समितियों से जुडने एवं स्वयं के स्त्रोत से पशु क्रय करने लगे एवं पशुपालन को लाभप्रद व्यवसाय के रूप में अपनाकर आय का प्रमुख स्त्रोत मानने लगे ।

दुग्ध सहकारी समिति की सदस्या खमरिया ग्राम के पशुपालक श्रीमती गायत्री बाई पत्नि श्री हरपाल सिंह द्वारा बताया गया कि हमारा गांव हटा खमरिया रजपुरा मार्ग ब्लाक पटेरा तहसील पटेरा जिला दमोह में स्थित है । हमारे गांव में दूध का उत्पादन कम होता है, परन्तु जब से हमारी दुग्ध समिति चालू हुई है पूरे गांव में हर्ष का वातावरण है । समिति के सदस्यों को दूध का उचित मूल्य मिल रहा है एवं जबलपुर दुग्ध संघ से प्राप्त होने वाली दूध उत्पादन बढाने वाली योजनाओं के कारण हमारे दूध की कीमत पूर्व में 15–18 रू प्रति लीटर प्राप्त होती थी जो अब 24–25 रू प्रति लीटर प्राप्त हो रही है । जिससे हमारी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है और जीवन स्तर में सुधार हुआ है ।

पूर्व में हमारे पास मात्र एक भैंस थी जो प्रतिदिन 4 लीटर दूध देती थी । अब हमने बुन्देलखण्ड पैकेज में प्राप्त लाभ के अंतर्गत 5 भैंसे ली हैं, डेयरी की स्थापना की है जिसमें 2.20 लाख स्वयं के स्त्रोत से लगाए जिसमें शेड भी बनाया गया है तथा समिति से भी पशु आहार क्रय किया है । अब हमारी आमदनी पूर्व की तुलना में 5 गुना हो गयी है ।

दुग्ध समिति गठन उपरांत दुग्ध संघ से चारा बीज, पशु आहार, कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा मिलने के कारण हमारी भैंसों के दूध उत्पादन में वृद्धि हुई है। साथ ही दूध का उचित मूल्य मिलने के कारण लाभ हो रहा है । श्रीमती गायत्री बाई की ही तरह गांव के अन्य दुग्ध उत्पादक भी समिति से जुडकर लाभ प्राप्त कर रहे हैं और प्रतिमाह 3000 से 5000 रूपये लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।